महान वैज्ञानिक राष्ट्रपति

ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

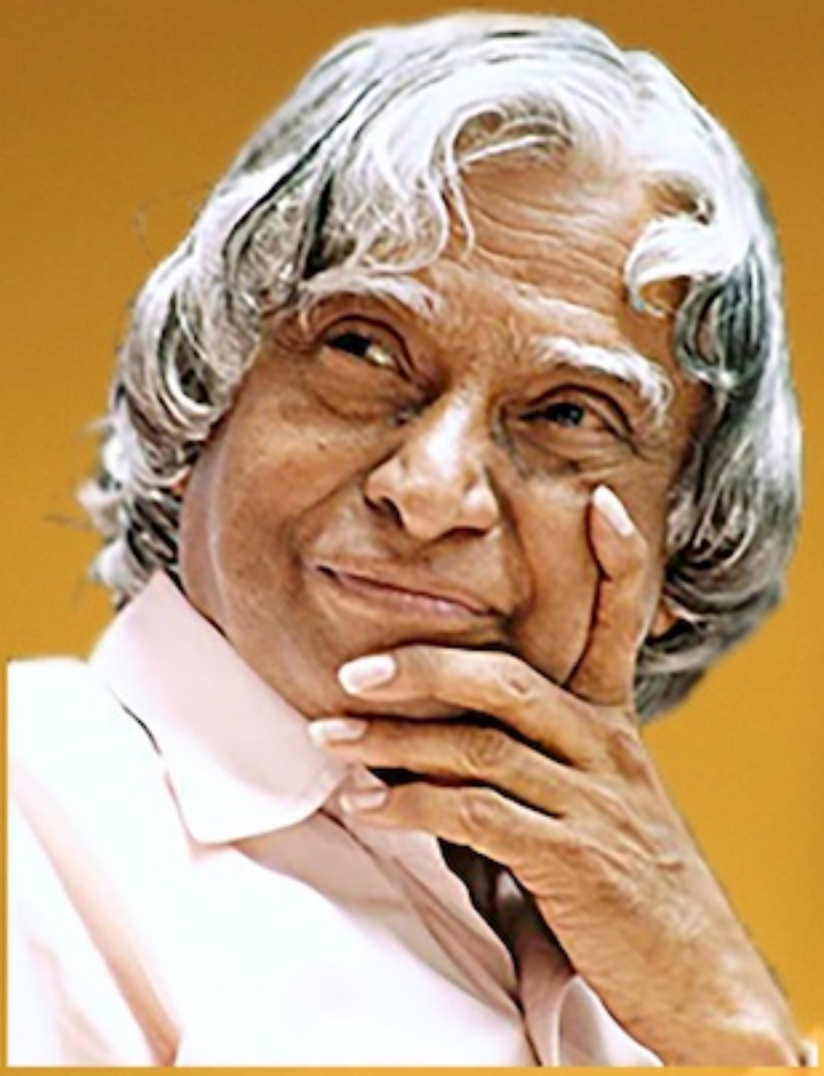

अलका प्रमोद

महान वैज्ञानिक

राष्ट्रपति ए.पी. जे. अब्दुल कलाम

(जीवन एवं उपलब्धियाँ)

अलका प्रमोद

विषय सूची

जीवन परिचय

1- बाल्यकाल 3

2- शिक्षा 8

वैज्ञानिक उपलब्धियाँ

1- 'नंदी' का निर्माण 1

2- गुंजायमान राकेट प्रक्षेपण 2

3- राकेट उपग्रह प्रक्षेपण यान (एस.एल.वी.) मिशन 2

4- रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डी.आर. डी. एल.) में पर्दापण 4

5- निर्देशित मिसाइल, विकास कार्यक्रम (आई.जी. एम.पी. डी.) की स्थाना 4

6- सफलता पृथ्वी की 5

7- अग्नि की उड़ान 6

8- परमाणु परीक्षण 6

उपलब्धियाँ

1- राष्ट्रपति बनने की राह में 7

2- राष्ट्रपति भवन से 7

3- सम्मान एवं पुरस्कार 7

व्यक्तित्व

1- व्यक्तित्व पर प्रकाश 8

2- कलाम का सपना 9

जीवन परिचय

बाल्यकाल

15 अक्टूबर सन् 1931 में तमिलनाडु के रामेश्वरम करबे की पावन धरती पर जब एक पुष्प खिला था तब किसी ने सोचा भी नहीं था कि उसकी सुगन्ध से एक दिन वह परिवार, वह कस्बा ही नहीं, सम्पूर्ण राष्ट्र सुवासित हो जाएगा। इस पुष्प है अबुल पाकिर जैनुलाबदीन अम्बल कलाम जिन्होंने एक मध्यम वर्गीय तमिल परिवार में श्री जैनुलाबदीन और श्रीमती आशियाना के घर में जन्म लिया। पिता श्री जैनुलाबदीन ने भले ही औपचारिक शिक्षा नहीं प्राप्त की थी पर, उदार सोच के बुद्धिमान आडम्बरहीन और सादगी पसंद व्यक्ति थे। वह नित्य सूर्योदय से पूर्व चार बजे ही नमाज पढ़ते थे और संध्या की नमाज में बालक अदुल को भी अपने साथ ले जाते थे। जब श्री जैनुलाबदीन नमाज के बाद बाहर आते तो विभिन्न सम्प्रदाय के लोग मस्जिद के बाहर थालों में पानी ले कर उनकी प्रतीक्षा करते रहते तब अपनी दो अँगुली उस पानी में डुबोकर कुछ पढ़ते, वह पवित्र जल लोग बीमार लोगों को ठीक करने के लिये ले जाते। लोग उस जल से ठीक भी होते थे क्योंकि अपने आत्मीयों के ठीक होने पर वह लोग अकुल कलाम के पिताजी को धन्यवाद देने आते थे, तब नम्र और शालीन जैनुलाबदीन अल्लाह को धन्यवाद देते जिनकी कृपा से यह संभव हो पाया। वह एक धर्म परायण व्यक्ति थे पर धर्म संकीर्ण नहीं थे। रामेश्वरम मंदिर के मुख्य पुजारी श्री परनी लक्ष्मण शारन्त्री उनके पिता के अभिन्न मित्र थे। धर्म वेशभूषा, खान-पान सर्वथा भिन्न होने पर भी दोनों के मन एक थे तथा दोनों ही उदार दृष्टिकोण के थे, तभी तो विचारधाराओं के अनुयायी होने पर भी मिलते तो आध्यात्मिक चर्चा करते। उन्होंने भले ही औपचारिक शिक्षा नहीं प्राप्त की थी पर उनका ज्ञान और बौद्धिक स्तर शिक्षित व्यक्ति से भी अधिक था, यही कारण है कि जब नन्हें कलाम ने उनसे नमाज के औचित्य के विषय में जिज्ञासा प्रकट की तो उन्होंने लोगों की समझ से बाहर की आध्यात्म की अवधारणाओं को अति सरल शब्दों में समझा दिया। कलाम को आज तक अपने पिता के कहे शब्द याद हैं, उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि "पिता जी कहते हैं कि जब तुम नमाज पढ़ते हो तो तुम अपने शरीर से इतर ब्रह्मांड का एक हिस्सा बन जाते हो जिसमें दौलत, आयु जाति या पंथ का कोई भेदभाव नहीं होता तथा खुद उनके के वक्त में, खुद उनके स्थान पर जो वे वास्तव में हैं